औजार कक्ष और प्रशिक्षण केन्द्र, दिल्ली के अभ्यार्थियों की वृत्तिका में कमी किया जाना और उन्हें उपस्कर सुविधा का न दिया जाना

†1334-ख. **श्री दिनकरराव गोविन्द राव पाटिल** : क्या उद्योग और कम्पनी कार्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या औजार कक्ष और प्रशिक्षण केन्द्र, दिल्ली में चार-वर्षीय डिपलोमा पाठ्यक्रम के एक सेमेस्टर के लिये प्रतियोगिता द्वारा केवल पन्द्रह अभ्यर्थियों का चयन किया जाता है;

(ख) क्या उनकी वृत्तिका में भारी कमी कर दी गई है; यदि हां, तो पहले की और वर्तमान वृत्तिकाओं की क्या दरे है;

(ग) यह कमी किस तारीख से की गई है ;

(घ) क्या उन्हें वे आवश्यक उपस्कर भी नहीं दिये जा रहे है जो पहले निःशुल्क उपलब्ध कराये जाते थे, यदि हां, तो कब से और इन उपस्करों के नाम तथा कीमतें क्या-क्या हैं;

(ङ) यदि उपर्युक्त भाग (ग) और (घ) का उत्तर हां, हो तो उसके क्या कारण हैं; और

(च) क्या ऊंची कीमतों और रुपये के अवमूल्यन को देखते हुए, पहले पद्धति पुनः आरम्भ किये जाने का विचार है; यदि हां, तो कब, और यदि नहीं, तो उसके क्या कारण हैं;

उद्योग और कम्पनी कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री आरिफ मोहम्मद खान) : (क) जी, हां ।

(ख) छात्रवृत्ति की वह मूल दरें जो 1978 से 1982 की अवधि में लागू थी पुनः लागू कर दी गई है । अगस्त 1982 में संशोधन करके दरें बढ़ा दी गई थी । अगस्त 1984 से पुनः मूल दरें लागू कर दी गई थी । छात्रवृत्ति की दरें 1978 से निम्नलिखित थी :–

वर्ष	1978 से जुलाई 1982 तक	अगस्त 1982 से जुलाई 1984	अगस्त 1984 के बाद से
प्रथम . .	रु० 100 प्र० मा०	रु० 150 प्रति माह	रु० 100 प्रति माह
द्वितीय . .	रु० 125 प्र० मा०	रु० 200 प्रति माह	रु० 125 प्रति माह
तृतीय . .	रु० 150 प्र० मा०	रु० 200 प्रति माह	रु० 150 प्रति माह
चतुर्थ . .	रु० 200 प्र० मा०	रु० 300 प्रति माह	रु० 200 प्रति माह

(ग) अगस्त, 1984 से ।

(घ) और (ङ) 200 रुपये की लागत के वर्नियर कैलिपर्स की निशुल्क आपूर्ति फरवरी 1985 में बंद कर दी गई है क्योंकि ये डेनमार्क प्राधिकारियों द्वारा निशुल्क दिए गए थे । परियोजना के लिए भारत-डेनमार्क समझौता दिसंबर 1984 में समाप्त हो गया है और परिणामतः वर्नियर कैलिपर्स की निशुल्क आपूर्ति भी समाप्त हो गई है ।

(च) इस समय पुरानी प्रणाली पुनः चलाने को कोई विचार नही है । प्रशिणार्थियों की भर्ती को बढ़ाने के वास्ते छात्रवृत्ति को कम किया गया था ।

†पूर्ववर्तः अतारांकित प्रश्न 1547 15 मई, 1985 से स्थानांतरित ।